जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

02 अप्रैल 2024

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया ने किया खान अब्दुल गफ्फार खान चौथे वार्षिक स्मारक व्याख्यान का आयोजन

सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल एक्सक्लूजन एंड इनक्लूसिव पॉलिसी (सीएसएसईआईपी), जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) ने गुरुवार, 28 मार्च, 2024 को विश्वविद्यालय के मीर अनीस हॉल में खान अब्दुल गफ्फार खान चौथे वार्षिक स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया। प्रोफेसर विधु वर्मा, सेंटर फॉर पॉलिटिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, जेएनयू ने "रिन्युइन्ग लिबरल डेमोक्रेसी: लेसन फ्रॉम अंबेडकर" विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में प्रोफेसर कुमार सुरेश, निदेशक (योजना और विकास) और अध्यक्ष, शैक्षिक प्रशासन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे और अध्यक्षता प्रोफेसर मुस्लिम खान, डीन, सामाजिक विज्ञान संकाय ने की।

कार्यक्रम की शुरुआत सीएसएसईआईपी के डॉ. बदरे अफशां द्वारा कुरान की आयत की तिलावत के साथ हुई, इसके बाद सीएसएसईआईपी के डॉ. शेख मुजीबुर रहमान की परिचयात्मक टिप्पणियाँ और सीएसएसईआईपी की मानद निदेशक प्रोफेसर तनुजा का स्वागत भाषण हुआ। केंद्र के संकाय सदस्यों द्वारा अतिथियों का अभिनंदन किया गया और उन्हें सेप्लिंग भेंट किये गए।

प्रोफेसर विधु वर्मा ने अपने व्याख्यान में वर्तमान समय में डॉ. अंबेडकर के विचारों की प्रासंगिकता के बारे में बात की और बताया कि कैसे उदार लोकतंत्र के बारे में उनकी राय इक्कीसवीं सदी के दो दशकों से भी अधिक समय बाद भी आज भी सत्य बनी हुई है। उन्होंने नव-उदारवाद के उदय के बाद उदार लोकतंत्र के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में बात की और इस बात पर प्रकाश डाला कि आधी सदी से भी पहले डॉ. अंबेडकर ने उदार लोकतंत्र की कमियों को स्वीकार किया था।

प्रोफेसर वर्मा ने भारत जैसे देश में उदार लोकतंत्र के सामने आने वाली अनोखी चुनौतियों के बारे में भी बात की, खासकर जाति के संबंध में, जिसे डॉ. अंबेडकर हमेशा लोकतंत्र के बारे में बोलते समय उजागर करते थे। उन्होंने श्रोताओं को याद दिलाया कि किसी को भी उदार लोकतंत्र के मूल्य और महत्व को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि भारत की आजादी के 75 से अधिक वर्षों के बाद भी, भारत के लिए डॉ. अम्बेडकर का दृष्टिकोण अभी भी पूरी तरह से साकार नहीं हुआ है, और अभी भी कदम उठाए जाने बाकी हैं। व्याख्यान के बाद एक इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर सत्र हुआ, जिसमें छात्रों और शोधार्थियों ने विचारपूर्वक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए।

व्याख्यान के बाद अपने संबोधन में, प्रोफेसर कुमार सुरेश ने बताया कि कैसे डॉ. अंबेडकर के कार्य और उनके विचारों ने उनके अपने विश्वदृष्टिकोण को प्रभावित किया है और किसी की शैक्षणिक गतिविधियों में डॉ. अंबेडकर के लेखन का अध्ययन जारी रखने के महत्व पर प्रकाश डाला। केंद्र की ओर से धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अरविंद कुमार ने दिया।

कार्यक्रम में जामिया और अन्य संस्थानों और विश्वविद्यालयों से बड़ी संख्या में छात्रों, शोधार्थियों और शिक्षाविदों ने भाग लिया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया